'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

प्रकाशन तिथि- 28 फरवरी, 2014

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, क्लॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 23354841-42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 17 ● अंक 7 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 16 से 28 फरवरी, 2014

सूरज, चंद्रमा और सत्य
ये तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुप सकती

&xtre q)

डॉ. उदित राज भाजपा में शामिल हुए

सी. एल. मौर्य

श्री राजनाथ सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में निरंतर प्रगति कर रही भाजपा में दलित-आदिवासियों की भागीदारी एवं खुशहाल व शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण हेतु डॉ. उदित राज कुछ प्रमुख साथियों के साथ 24 फरवरी को शामिल हुए।

डॉ. उदित राज ने कहा कि आज़ादी के बाद देश में शासन-प्रशासन की बागडोर अधिकतर समय कांग्रेस के ही हाथ में थी। आज़ादी के 66 वर्ष बीत गए दलित-आदिवासी की प्रगति में खास परिवर्तन नहीं हुआ। आरक्षण यदि सरकारी नौकरियों एवं जनप्रतिनिधित्व में नहीं होता तो हम आज भी वहीं खड़े होते जब देश आजाद हुआ था। आज भी इनकी भागीदारी व्यापार, पूंजी, उच्च शिक्षा, मीडिया, उच्च न्यायपालिका, कला एवं संस्कृति, निर्माण, टेलीकॉम, विभिन्न प्रकार की सेवाएं, सप्लाई, ठेका, आयात-निर्यात, आई.टी. आदि में शून्य के बराबर है। क्या बिना दलित भागीदारी के खुशहाल और अखण्ड भारत का निर्माण किया जा सकता है ?

उदित राज ने आगे कहा कि वर्तमान यूपीए सरकार के लगभग 10 साल के शासन में एक भी ऐसी उपलब्धि नहीं है, जो कहा जा सके कि दलितों व आदिवासियों की गिरती हुई हालत को सुधारने में सहयोगी हो। संसद में आरक्षण कानून बनाने के लिए 2004 से विधेयक लंबित है, जो अभी तक पास नहीं किया जा सका। पदोन्नति में आरक्षण देने के लिए राज्य सभा से तो बिल पास हो गया है, लेकिन लोकसभा से न हो सका। इस सत्र में यह भी आश्वासन दिया गया था कि स्पेशल कंपोनेंट और ट्राइबल सब-प्लान को लागू करने के लिए संसद में कानून बनेगा, लेकिन वह भी न हो सका। 2004 में न्यूनतम साझा कार्यक्रम में निजी क्षेत्र में आरक्षण देने के लिए यूपीए सरकार ने वायदा किया था, लेकिन समितियों की बैठकों तक ही सीमित रह गया। बहुजन समाज पार्टी का जब उत्थान हुआ तो उसी समय नई आर्थिक नीति देश में लागू हुई और जिसके कारण भूमण्डलीकरण, उदारीकरण व निजीकरण बढ़ा। निजीकरण के कारण नौकरियां लगातार घटी। तब बसपा या दलित नेतृत्व के उभार का क्या लाभ ? लाभ तो तब होता, जब या तो निजीकरण रूक पाता या उसमें भागीदारी सुनिश्चित होती। ऐसे में बहुजन समाज पार्टी के अस्तित्व का हमें क्या फायदा ?

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में सन् 1997 से पांच आरक्षण विरोधी आदेश वापिस किए जाने को लेकर संघर्ष जारी था। ज्ञात रहे कि कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग, भारत सरकार, द्वारा ये आदेश उस समय जारी हुए थे, जब केन्द्र में सामाजिक न्याय की सरकार थी। उसके बाद श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार आयी। हमारा संघर्ष आरक्षण विरोधी आदेशों को वापिस कराने का जारी रहा और वाजपेयी जी की सरकार ने 81वां, 82वां एवं 85वां संवैधानिक संशोधन किया और तब जाकर छीने गए आरक्षण के लाभ को बहाल कराया जा सका।

उन्होंने आगे कहा कि श्री राजनाथ सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी न केवल पहले की मांगें पूरी करेगी बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में भागीदारी का युग

शेष पृष्ठ 5 पर...

भाजपा अध्यक्ष, श्री राजनाथ सिंह द्वारा डा. उदित राज जी के भाजपा में शामिल होने के अवसर पर दिए गए भाषण के प्रमुख अंश :

अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय पासवानजी, महामंत्री संगठन, श्री रामलाल जी, पार्लियामेंट बोर्ड के मेंबर व ऑल इंडिया जनरल सेक्रेटरी श्री थावरचंद गहलोत, डा. विजय सोनकर शास्त्री और अभी-अभी राज्य सभा में निर्वाचित सदस्य व भारत सरकार के पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सत्य नारायण जटिया, अखिल भारतीय महासचिव श्री जे.पी. नड्डा व हमारे राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री सुधांशु त्रिवेदी तथा उपस्थित सभी बहनों व भाइयों सबसे पहले पार्टी अध्यक्ष होने के नाते मैं देश की जानी-मानी शख्सियत और जिन्हें मैं यह भी कह सकता हूं कि वे केवल दलित आइडियोलॉग के रूप में ही रिकोग्नाइज नहीं है, बल्कि भारत राष्ट्र को बनाने के लिए जैसा आइडियोलॉग होना चाहिए, जैसा एक दार्शनिक होना चाहिए, जैसा एक चिंतक होना चाहिए, उस रूप में मैं उदित राज जी को देखता हूं। उत्तर प्रदेश में भी इन्होंने प्रभावी भूमिका निभाई है। वैसे अखिल भारतीय स्तर पर इनके

शेष पृष्ठ 3 पर...

बीजेपी को क्यों चूना?

डॉ. उदित राज

मैंने अक्टूबर, 1997 में अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के निर्माण के ही समय से सामाजिक जीवन की शुरुआत की। उस वर्ष 5 आरक्षण विरोधी आदेश जारी हुए थे और मेरे नेतृत्व में पूरे देश के कर्मचारी, अधिकारी, बुद्धिजीवी एवं सामाजिक कार्यकर्ता एक होकर के देशव्यापी आंदोलन चलाने में सहयोग किए। इसी समय वाजपेयी जी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनी और हम उनसे मिले। वाजपेयी जी बड़े उदार दिल के थे और मुझसे पूछा कि आरक्षण विरोधी आदेश जारी किसी और के सरकार के समय में हुए थे, शिकायत हमसे क्यों? उनके ये शब्द थे ''करे कौन-भरे कौन ? हमने आग्रह किया कि विचार तो आपको ही करना है। अंत में उन्हीं की सरकार ने 81वां, 82वां एवं 85वां संवैधानिक संशोधन किए और आरक्षण बचाया। भाजपा के प्रति दलितों एवं आदिवासियों का रुख नरम पड़ने लगा था कि विनिवेश मंत्रालय ने फिर से उन्हें डरा दिया। तमाम सरकारी उपक्रम जैसे मारुति उद्योग का विनिवेश एवं बिक्री शुरु हुआ तो दलित-आदिवासियों को लगा कि उनका आरक्षण समाप्त करने का यह षड्यंत्र है। 2004 में दूर-दूर तक यह लोगों को आभास नहीं था कि भारतीय जनता पार्टी की लोकसभा चुनाव में हार होगी। फील गुड फैक्टर और शाइनिंग इंडिया के नारे के साथ बीजेपी 6 महीने पहले लोकसभा के चुनाव में चली गई और अंत में हार हुई। भाजपा का आकलन गलत नहीं था लेकिन एक बात का उसे एहसास नहीं हुआ कि दलित समाज का कर्मचारी, अधिकारी एवं बुद्धिजीवी का प्रभाव खुले रूप से नहीं दिखता लेकिन उसकी भीतरी मारक क्षमता बहुत होती

शेष पृष्ठ 4 पर...

भाजपा में शामिल होने के अवसर पर डॉ. उदित राज, बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए। साथ में (बांये से दांये) : डॉ. विजय सोनकर शास्त्री, सत्य नारायण जटिया, विनोद कुमार, संजय पासवान, थावरचंद गहलोत, भवनाथ पासवान एवं अन्य

उन दलित वीरों को सलाम

डॉ. सुमनाक्षर

किससे मांगते न्याय व सम्मान?

दलित महार सैनिकों के सामने यह अंतिम अवसर था अपना पराक्रम दिखाने का और अन्यायी व अत्याचारी ब्राह्मण पेशवाई शासन को खत्म करने का। इन मात्र 800 दलित महारों ने अपनी रणनीति और पराक्रम से 30 हजार पेशवाई सेना के छक्के छुड़ाकर परास्त कर दिया और अपने शौर्य से पेशवाओं पर विजय प्राप्त कर सदा के लिए पेशवाई शासन को खत्म कर दिया।

अंग्रेजी हुकूमत ने उन दलित महार-सेना की शौर्य गाथा की प्रशंसा और यादगार में 1851 में एक 'विजय स्तंभ' बनाया जो आज भी भीमा नदी के किनारे पर खड़ा उन वीरों का शौर्य व पराक्रम को दर्शा रहा है। भारत सरकार ने 1981 में कोरेगांव के उन दलित वीरों की स्मृति में एक डाक टिकट जारी कर इन्हें श्रद्धांजलि दी।

बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर हर वर्ष 1 जनवरी को भीमा कोरेगांव की शौर्य भूमि पहुंचकर इन दलित महार सैनिकों को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते थे जिन्होंने दिन में दलितों (अछूतों) के बाहर निकलने पर पाबंदी लगा दी थी और रात में बाहर सड़कों पर चलने पर गले में हांडी लटकाकर व कमर में झाड़ू बांधकर चलने का कानून ही बना दिया था ताकि वे जमीन पर न थूक सकें और न ही उनके पैरों क चलने से जमीन गंदी हो सके। झाड़ू उनके पैरों के निशानों के साथ-साथ मिटाकर साफ करती चलें।

भीमा कोरेगांव की इस अमर शौर्य गाथा की भारत के इतिहासकारों ने न केवल उपेक्षा की, बल्कि उसे दबाये रखा, क्योंकि इस घटना ने दलितों की वीरता, पराक्रम व शौर्य से दलितों का स्वाभिमान ऊंचा होता था, वहीं ब्राह्मण पेशवाओं की हार दिखाने से ब्राह्मण समाज का अपमान होता था।

हम भीमा कोरेगांव के इन दलित वीरों को सलाम करते हुए उनके अद्भुत पराक्रम के लिए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने गले की हांडी और कमर की झाड़ू से दलितों (अछूतों) को सदा-सदा के लिए छुटकारा दिला दिया।

भारतीय इतिहासकारों ने सदैव ही दलित वीरों के पराक्रम, शौर्य, वीरता की उपेक्षा की है। आप जानते ही हैं कि जिस 1857 के भारत के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणता मंगल पांडेय को बताया गया, वास्तव में उसका असली प्रेरणता मातादीन भंगी था जो कलकत्ता की बैरकपुर छावनी में अंग्रेजों की सेवा में संलग्न था। उसने ही मंगल पांडे को बताया था कि जिस बंदूक के कारतूस को तुम मंह से खोलते हो, उस पर गाय व सूअर की चर्बी लगी रहती है। तुम्हारे पानी के लोटे से हमारे छू जाने से जब तुम्हारा धर्म भ्रष्ट होता है तो मुंह से उस कारतूस को खोलने से तुम्हारा धर्म भ्रष्ट नहीं होता है। इसके बाद ही मंगल पांडे ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह शुरु किया था, पर उस विद्रोह का असली प्रेरक मातादीन भंगी ही था, जिसे अंग्रेजों ने मंगल पांडे के साथ ही फांसी दी थी, पर इतिहासकारों ने मंगल पांडे को इस प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणता बता कर अमर शहीद मातादीन भंगी के साथ अन्याय किया।

इसी तरह भारत के इस प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन में झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई को अंग्रेजों के

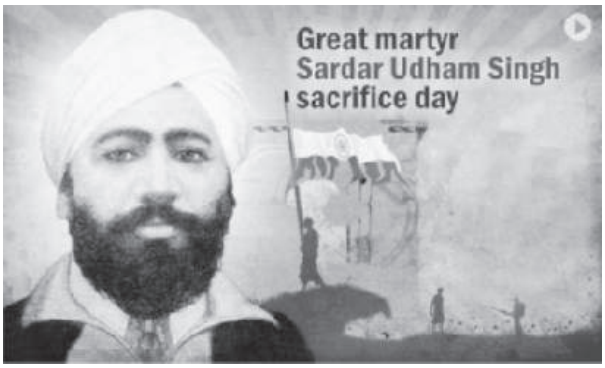

खिलाफ लड़ने का श्रेय दिया जाता है, पर सच्चाई यह है कि महारानी लक्ष्मीबाई झांसी में अंग्रेजी सेना के साथ कभी लड़ी ही नहीं, वह तो अपने दत्तक पुत्र को लेकर झांसी महल से निकलकर जान बचाकर ग्वालियर चली गई थी, उसकी जगह उसकी हमशक्ल दलित वीरांगना झलकारी बाई कोइरन लड़ी थी और अंग्रेजी सेना को अपना पराक्रम व शौर्य दिखाते हुए गोली लगने से शहीद हो गई थीं। उसके शहीद हो जाने पर अंग्रेजी सेनापति बहुत खुश था कि उन्होंने महान पराक्रमी महारानी लक्ष्मीबाई को मार दिया, पर जब उसे पता चला कि यह तो उसकी हमशक्ल दलित वीरांगना झलकारी बाई थी, तो वह उसकी वीरता के सामने नतमस्तक होकर बोला - "अगर ऐसी 4-5 वीरांगनायें भारत में हों और हो जाएं तो कोई भी शक्ति अंग्रेजों को और ज्यादा दिन भारत में नहीं रोक सकेगी।"

1919 में वैशाखी में पूर्णिमा के दिन अमृतसर (पंजाब) में जालियांवाला बाग में कुछ लोग इकट्ठे होकर अपनी समस्याओं पर चर्चा करने के लिए सभा कर रहे थे, उसी समय अंग्रेजी सेना के ब्रिगेडियर जनरल ओ डायर ने सभा को छिन्न-भिन्न करने के इरादे से अंग्रेजी सेना को गोली चलाने का आदेश दे दिया जिसमें हजारों निर्दोष घटनास्थल पर ही मारे गये। बालक उधम सिंह पेड़ पर चढ़ा इस नरसंहार को अपनी आंखों से देख रहा था। उसने बेचैन और अत्यंत दुःखी होकर प्रण किया- "मैं जनरल डायर को मारकर इस जालियांवाला कांड में मारे गये शहीदों का बदला लूंगा।" उधम सिंह ने अपने इस प्रण को इंग्लैंड में इस घटना के 21 साल बाद जनरल डायर को मारकर अपना प्रण पूरा किया और जालियांवाला बाग में हुए सामूहिक नरसंहार का बदला लिया। अंग्रेजों ने वीर उधम सिंह को इस अपराध में 1941 में इंग्लैंड में ही फांसी दे दी। दलित वीर नायक शहीद उधम सिंह के इस महाबलिदान को स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में उचित स्थान नहीं दिया। पर देश का बहुजन समाज उसके इस पराक्रम वीरता और बलिदान को सलाम करते हुए उसे श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

1971 में बाबू जगजीवन राम जी देश के रक्षामंत्री थे जब पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया। बाबू जी ने तब भारतीय सेना के पराक्रम को प्रोत्साहित करते हुए कहा था- "यह लड़ाई हम पाकिस्तान की धरती पर लड़ते हुए, उसे परास्त ही न करेंगे, बल्कि उसे ऐसा सबक सिखायेंगे कि वह भविष्य में भारत की ओर आंख उठाने का साहस न कर सके।" बाबू जी ने अपनी अद्भुत रणनीति से वह सब कर दिखाया। 1971 के भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान सेना के 1 लाख सैनिकों ने भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और पाकिस्तान के दो टुकड़े होकर 'बांग्लादेश' बन गया। इस महान विजय का श्रेय महान दलित सपूत बाबू जगजीवन राम जी को जाता है और उन्हें इसके लिए 'भारत रत्न' सम्मान मिलना चाहिए था, पर राजनीतिक चाटुकारों ने इस महान विजय का सेहरा प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को देकर उसे 'भारत रत्न' सम्मान से नवाजा, जो देश के दलितों के साथ महान अन्याय व दुराचार है जिसके लिए ऐसे झूठे चाटुकारों को क्षमा नहीं किया जा सकता। उस महान नायक, महान नीतिकार, कुशल प्रशासक, दलित गौरव बाबू जगजीवन राम जी को हमारा सलाम। वह देश के असली 'भारत रत्न' हैं। उन्हें हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि।

(साभार :- हिमायती)

जाति देखकर कॉपी जांचने में दोष सिद्ध

वर्धमान महावीर मेडिकल और सफदरजंग अस्पताल के अनुसूचित जाति और जनजाति के 25 छात्रों को जबरन फेल करने और दूसरे सेमेस्टर में नहीं बैठने देने के मामले में चार डाक्टरों को दोषी पाया गया है। इस बाबत अनुसूचित जाति और जनजाति आयोग द्वारा गठित दो सदस्यीय कमेटी ने अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को सौंप दी है।

आयोग अध्यक्ष पीएल पुनिया और प्रो. बालाचंद्रन मुंगेकर की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि मेडिकल कालेज के डा. वीके शर्मा, डा. जय श्री भट्टाचार्या, डीन डा. राज गुप्ता और डा. शोभा दास को छात्रों को जबरन फेल करने के मामले में दोषी पाया गया है। उपरोक्त सभी ने अधिनियम का उल्लंघन किया है। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में आरोपी डाक्टरों को निलंबित करने की बात कही है। मालूम हो कि वर्ष 2010 की एमबीबीएस की प्रथम वर्ष की परीक्षा में अनुसूचित जाति और जनजाति के 35 छात्रों को फिजियोलाजी परीक्षा में फेल कर दिया

गया था। इसी वर्ष अक्तूबर में ली गई पूरक परीक्षा में भी 35 में से 25 छात्रों को उसी विषय में फेल कर दिया गया।

इस मामले के विरोध में नाराज छात्रों ने हाईकोर्ट में अपील की थी। हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी छात्रों को दूसरे सेमेस्टर में नहीं बैठने दिया गया। छात्रों की शिकायत के बाद आयोग ने एम्स के सर्जरी हेड डा. मुरमू की अध्यक्षता में दो सदस्यीय कमेटी गठित की, जिसकी रिपोर्ट में भी छात्रों के प्रति भेदभाव की बात सामने आई। इस बार आयोग ने खुद जांच की तो चार डाक्टरों को दोषी पाया गया।

(साभार : हिंदुस्तान)

कुछ भी न करो तो ...

देश में आरक्षण विरोधी एवं जातिवादी ताकतों की सक्रियता को देखकर कुछ तो प्रेरणा लेनी चाहिए। अगर कुछ नहीं कर सकते हो तो कम से कम सप्ताह में पांच ऐसे लोग, जो अंबेडकरवादी और मिशनरी हैं, का नाम, पता व मोबाइल नंबर 56767 पर एसएमएस करें। 160 अक्षर (Character) से ज्यादा का एसएमएस नहीं भेजा सकता है। एसएमएस में सबसे पहले UR टाइप करें उसके बाद SPACE देकर नाम, पता एवं मोबाइल नंबर आदि दें। मोबाइल नंबर का होना ज्यादा जरूरी है और ईमेल हो तो उसे भी भेजें।

परिश्रम और समर्थक यदि इतना छोटा सा भी काम कर लें तो हमारे पास लाखों सही लोगों का मोबाइल नंबर आ जाएगा और जब भी चाहेंगे तो उन्हें अपने आंदोलन या आवश्यक सूचना एसएमएस के द्वारा सूचित करते रहेंगे। पूरा पता आ जाए तो और भी अच्छा है। यदि कई लोगों का साथ भेजना हो तो कम से कम नाम, जिला, प्रदेश और मोबाइल एसएमएस करें। इस तरह से एक से ज्यादा लोगों का डिटेल एक ही एसएमएस में आ जाएगा। भेजने के लिए सामने का उदाहरण को गौर से पढ़ें-

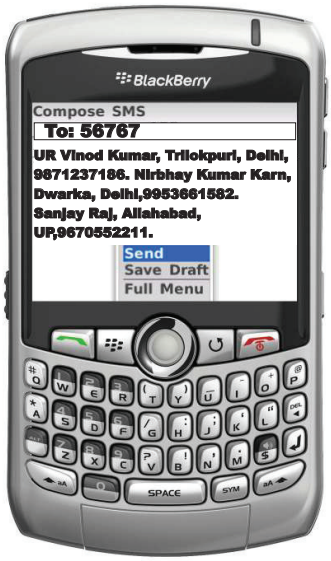

(Note- UR के बाद एक स्पेस अवश्य छोड़ें)

दैनिक समाचार पत्र 'पंजाब केसरी' में 21 फरवरी को *प्रकाशित लेख*

झूठ और भ्रष्टाचार

डॉ. उदित राज

झूठ और भ्रष्टाचार कभी-कभी अधिक अप्रिय लगते हैं। पुरानी कहावत है कि सत्यम ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात। यह जरूरी नहीं है कि सच हमेशा प्रिय ही हो अर्थात् सत्य की नींव में ही अंर्तविरोध है। ऐसी सोच और संस्कार एक दिन में नहीं पनपते बल्कि सदियों की देन है। वर्तमान में भ्रष्टाचार के खिलाफ माहौल बना हुआ है। जिन लोगों को यह अच्छा लग रहा है, उनके बारे में विश्लेषण करने की जरूरत है कि वास्तव में उनकी नियत दुरूस्त है। इसमें वे तमाम लोग शामिल हैं जो स्वयं धन, संपत्ति और सत्ता से वंचित हैं। यदि उन्हें मौका मिल जाए तो अधिकतर को भ्रष्टाचार के कतार में शामिल होने में देरी नहीं लगेगी। देश में भ्रष्टाचार के मामले में इतना उथल-पुथल तो हो रहा है लेकिन कुछ ही लोग हैं जो इस बीमारी के कारणों में जाने की कोशिश कर रहे हैं। बीमारी का इलाज तभी सही हो सकता है जब कारण का पता लग जाए। भ्रष्टाचार तो देश में है लेकिन कारणों में जाने की कोशिश नहीं की जा रही है। सरकार की सीमा है कि वह कानून बनाकर के ही इसे रोक सकती है न कि तमाम कारणों का निदान कर सके। सरकार से हटकर के तमाम अन्य संस्थाओं एवं लोगों की उतना ही जिम्मेदारी बनती है। क्या बुद्धिजीवियों की कलम की ताकत की जिम्मेदारी नहीं है, क्या समाज सुधारकों का कर्त्तव्य नहीं है, अन्य तमाम सामाजिक-आर्थिक संस्थाएं हैं जो इस क्षेत्र में कुछ करें। क्या साथ-साथ और मुद्दे जरूरी नहीं है जैसे सामाजिक न्याय एवं समतामूलक समाज की सीपना? माना कि कई मुद्दों का समावेश एक साथ नहीं हो सकता लेकिन उनके आधार के बगैर लक्ष्य प्राप्त करना असंभव है। जयप्रकाश नारायण के आंदोलन का भी प्रमुख उद्देश्य भ्रष्टाचार खत्म करने का था लेकिन उसका क्या हुआ? वी. पी. सिंह के आंदोलन का केंद्र भी यही रहा, हम सभी लोग उसका हश्र जानते हैं। भारत विविधता वाला समाज है इसलिए तदनानुसार ही आंदोलन चल सकता है।

झूठ को हमारे यहां बहुत बुरा नहीं माना जाता इसलिए भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़े योद्धाओं के झूठ का संज्ञान नहीं लिया जा रहा है। अरविंद केजरीवाल ने बच्चों की कसम खा के कहा था कि वह किसी पार्टी का समर्थन नहीं लेंगे लेकिन कांग्रेस का लिया। अभी तक केजरीवाल कह रहे थे कि जिस सीट से नरेंद्र मोदी खड़े होंगे वहीं से वह भी उनके खिलाफ चुनाव लड़ेंगे लेकिन अब वह इस बात से भी पीछे हट गए हैं। अपने पत्र में दिए गए 18 सूत्रीय वादों को पूरा कर सकते थे लेकिन नहीं किया। 17 फरवरी को हजारों सफाईकर्मियों ने सफाई कामगार संगठनों का परिसंघ के नेतृत्व में जंतर-मंतर पर धरना देकर के पूछा कि ठेकेदारी प्रथा का खात्मा एवं नियमित करने के लिए विधानसभा में विधेयक पास करने की अनिवार्यता नहीं थी, एक सरकारी आदेश के द्वारा यह काम किया जा सकता था तो 49 दिन की सरकार में क्यों आदेश नहीं निकाला जा सका? 49 दिन क्या 49 मिनट से भी कम लगता। तमाम सारे कार्य सरकारी आदेशों से हो सकते थे। कहा था कि सरकार बनने पर 30 दिन के अंदर भ्रष्टाचारियों को जेल भेजेंगे तो क्या एक को भी भेज सकें? यह भी दावा किया गया कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने कहा कि दिल्ली में आप की सरकार के समय में भ्रष्टाचार कम हुआ है लेकिन वह भी झूठ निकला। चुनाव के समय यह भी कहा था कि बिजली कंपनियां 50 प्रतिशत चोरी कर रही है, वह भी झूठ निकला क्योंकि लगभग 80 प्रतिशत मूल्य बाहर से बिजली क्रय करने में ही लगता है। कहा था कि जनता दरबार लगेगा लेकिन एक भी बार नहीं हो सका। आप सरकार के मंत्री शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग पर तो छापा मारे लेकिन जहां असली भ्रष्टाचार था, वहां पर कुछ क्यों नहीं कर सके? कितने पानी के टैंकर माफिया के ऊपर छापे मारे? रेत खनन, भू-माफिया, दवा, फल, सब्जी आदि में मिलावट करने वालों पर न कोई छापा और न ही कार्रवायी हुयी।

सामाजिक न्याय का मुद्दा गायब रहा। इस देश में सर्वाधिक लोग भ्रष्टाचार से उतने परेशान नहीं हैं जितना जाति के आधार पर भेदभाव और सड़ी-गली परंपराओं के कारण असमानता और मानवाधिकारों का हनन। आजादी से लेकर के अभी तक जितनी भी सरकारें रही या राजनैतिज्ञ, उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों और असमानता पैदा करने वाले परंपराओं के खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठाए। हजारों वर्ष के समाज में राष्ट्रीयता का अभाव रहा है। चाहे ही थोड़े ही हमलावर बाहर से आए, देश के ऊपर आसानी से हुकूमत कर गए। बहुसंख्यक जनता को कोई सरोकार ही नहीं था कि देश उनका है कि और किसी का। हमला के समय तो कुछ विरोध हुआ भी लेकिन उसके बाद में तो स्वाभाविक रूप से सभी हुक्मरानों को स्वीकार कर लिया जाता रहा। इसका वजह है सामाजिक और धार्मिक। जब किसी जाति को जन्म से एक पेशे का आरक्षण दे दिया जाए कि उसका कार्य मल-मूत्र उठना और साफ करना तो उसे क्या सरोकार कि देश और समाज में क्या हो रहा है? जन्म से ही जिन लोगों को मरे हुए जानवर को उठाने का कार्य ही सौंपा गया हो तो वे लोग इसे अपनी किस्मत ही मान बैठें और शासन-प्रशासन तो उसके लिए जैसे कोई अनभिज्ञ चीज हो। यदि शुरू से ही सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावना होती तो इतना भ्रष्टाचार होता ही नहीं। जो व्यक्ति भ्रष्ट है उसके अंदर राष्ट्रीयता है ही नहीं अगर है भी तो यह उसकी दूसरी वरीयता है। आर्थिक भ्रष्टाचार इतना जल्दी खत्म होने वाला है नहीं और जो लोग सपनों की दुनिया में जी रहे हैं कि 'आप' के आंदोलन से यह खत्म होने वाला है, वे इतिहास को नहीं जानते और समाज की समझदारी भी उनमें नहीं है। जो समाज अपने इतिहास को भूल जाता है वह वर्तमान को तो ठीक से जी नहीं सकता और भविष्य को भी नहीं सृजित कर सकता है। भ्रष्टाचार अवश्य मिटना चाहिए लेकिन इसके योद्धाओं को अपना उल्लू सीधा करने के लिए जनता को गुमराह नहीं करना चाहिए। उन्हें भ्रष्टाचार को समग्रता में देखना पड़ेगा। क्या कोई भगवान या देवी-देवता मान्यता पूरा करने के लिए माला-फूल, फल, मिठाई, चादर, सोना-चांदी, मुर्गा-मूर्गी, बकरा आदि की चढ़ावा मांगते हैं लेकिन लोग ऐसा कर रहे हैं। हम सबमें एक भावना बन गई है कि बिना घूस दिए काम नहीं होता और यही भ्रष्टाचार का मूल कारण है। झूठ कहीं भ्रष्टाचार से ज्यादा खतरनाक है। कभी-कभी झूठ समग्र समाज और देश को गलत दिशा में धकेल देता है। भ्रष्टाचार झूठ का ही उत्पादन है। आखिर में यह क्या है कि जब कोई घूस लेता है और देता है तो क्या वह किसी से बताने जा रहा है या सार्वजनिक रूप से इस कृत्य को स्वीकार करता है?

शेष पृष्ठ 1 का...

भाजपा अध्यक्ष, श्री राजनाथ सिंह द्वारा डा. उदित राज जी के भाजपा में शामिल होने के अवसर पर दिए गए भाषण के प्रमुख अंश :

कार्यक्रम व दौरे चलते रहते है। लेकिन मैंने देखा चिंतन की गहराई उदित राज जी के अंदर है। चिंतन की गहराई हो, लेकिन अर्हकार न हो यह गुण किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता होती है। इनके अंदर मैंने अर्हकार नहीं देखा।

हमसे यदि कोई पूछे कि भारत को आप सचमुच एक महान, सशक्त, स्वावलंबी भारत बनाना चाहते है तो कैसे बनेगा ? यदि सामान्य किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति से बात कीजिए, तो वो यही कहेगा कि जब तक भारत का सोशियो इकॉनोमिक डेवलेपमेंट नहीं होगा तब तक भारत सशक्त और स्वावलंबी भारत नहीं बन सकता। लेकिन आपने देखा कि इस आजाद भारत में लंबे समय तक कांगेस ने हुकूमत की है। न तो भारत में सोशियो डेवलपमेंट हुआ, न इकॉनामिक डेवलपमेंट हुआ, बल्कि सोशियो डिसपेरिटी और इकॉनामी डिसपेरिटी सामाजिक व आर्थिक स्तर पर भी असमानता बढ़ी है। इसके लिए कौन सी राजनीतिक पार्टी जिम्मेदार है। सचमुच यदि हम भारत को सशक्त और स्वावलंबी भारत बनाना चाहते हैं तो समाज का एक भी वर्ग जब तक सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा रहेगा अथवा आर्थिक व सामाजिक लाभों से वंचित रहेगा तब तक भारत को एक सशक्त भारत बनाने की हमारी कल्पना कभी साकार नहीं हो सकती। भारतीय जनता पार्टी भारत को एक महान राष्ट्र ही नहीं बनाना चाहती, बल्कि भारत को विश्व गुरू के पद पर आसीन करना चाहती है। हम कैसे इस यथार्थ, सच्चाई को भूल सकते है। अछूत की बात की जाती है। मैं आज उदित राज जी जो इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए हैं उनके माध्यम से सारे देश को संदेश देना चाहता हूं कि 'अछूत' शब्द किसी राजनीतिक पार्टी की डिक्शनरी में हो सकता है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी की डिक्शनरी में अछूत शब्द नहीं है।

बाबा डॉ. भीमराव अम्बेडकर का देश को जो योगदान है उसे कौन भूल सकता है। इसलिए भाजपा ने उनके जन्मदिन पर 14 अप्रैल को सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाने का संकल्प लिया है, जो हम प्रतिवर्ष मनाते है। क्या कांग्रेस यह दावा कर सकती है कि बाबा डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जन्मदिवस को उनकी पार्टी एक उत्सव, कार्यक्रम के रूप में मनाती है। बार-बार इस दलित समाज को लोगों ने वोट बैंक माना है। हम किसी को वोट नहीं मानते, बल्कि इंसान मानते है और हर इंसान को (हमारी तो भगवान के प्रति आस्था है) मैं भगवान मानता हूं। आज मैं इस अवसर पर डॉ. उदित राज जी को भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का सदस्य भी मनोनीत करता हूं। डॉ. उदित राज जी के भाजपा प्रवेश के अवसर पर देश के विभिन्न राज्यों से उनके समर्थक शुभचिंतक आप सभी पहली बार भाजपा केन्द्रीय कार्यालय में पधारे है, मैं आप सभी का हृदय से स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं।

डॉ. अंबेडकर : कलम का कमाल (भाग:2), संपूर्ण वाड्मय का सार : खंड 12 से साभार

गोरेगांव की घटना ने मुझे इतना सदमा पहुंचाया जैसे मुझे पहले कभी नहीं हुआ था-डॉ. बी. आर. अंबेडकर

ये घटना 1901 के आसपास घटी जब डॉ. अंबेडकर 9 वर्ष के होंगे। ''मेरे पिता ने सेना से सूबेदार क पद से रिटायर होकर जिला सतारा के खातव तालुका के क्षेत्र गोरगांव में नौकरी कर ली थी। हमारे पिता ने हमें गोरेगांव में गर्मियों की छुट्टियां गुजारने को कहा था। हम खुश थे क्योंकि हमने अभी तक रेलवे स्टेशन नहीं देखा था। हमने यात्रा की बड़े उल्लास से तैयारी की। नए कपड़े, नए जूते, नई ठोपियां और नई धोतियां पहनी।

> बाबा साहब की इस दर्दनाक घटना का इसलिए उल्लेख किया जा रहा है क्योंकि आरक्षण का लाभ लेकर लोग अपनी स्वार्थपरता की जिंदगी जी रहे हैं, देखें कि पूर्व में हमारी क्या दुदर्शा थी। आंदोलन और सहयोग की अपील जब करता हूं तो कितने बहाने और कारण बनाकर लोग निकल जाते हैं। जो बहुत ही निकम्मा-लोभी होगा वही इस घटना से प्रभावित हुए बिना रह पाएगा। हे स्वार्थियों! कुछ तो सोचो।
>
> -डॉ. उदित राज

पिताजी ने हमें यात्रा का सारा विवरण बता दिया था। बड़े भाई ने टिकट खरीदे। हम चार जनें मैं, बड़ा भाई और मेरी बहन के दो बेटे मासुर रेलवे स्टेशन पर शाम 5 बजे उतरे। पिताजी ने हमें लेने के लिए अपना आदमी भेजने को कहा था किन्तु वह नहीं आया।

स्टेशन मास्टर ने जब हमसे पूछा तो हमने अपनी कठिनाई बताई। उसे हमारे भेष व भाषा से ऐसा लगा जैसे हम ब्राह्मण हैं। उसकी सहानुभूति हमारे साथ हुई जैसे हिंदुओं में प्रायः होता है। उसने हमसे हमारी जाति पूछी। मैंने तुरंत बताया कि हम महार जाति से हैं। (महार जाति को अछूत माना जाता है) यह सुनते ही स्टेशन मास्टर हैरान हो गया और अपने कमरे में चला गया।

आधे घण्टे के बाद स्टेशन मास्टर लौटा और पूछने लगा : ''अब आपको क्या करना है।'' हमने कहा कि यदि कोई बैलगाड़ी किराए पर मिले तो हम उस द्वारा जा सकते हैं। बैलगाड़ी वालों में भी हमारे अछूत होने की बात फैल गई थी। हम बैलगाड़ी का दोगुना भाड़ा देने के लिए तैयार थे। अंत में एक गाड़ीवान के साथ इस तरह समझौता हुआ कि हम भाड़ा दोगुना देंगे और बैलगाड़ी भी खुद ही चलाएंगे ताकि गाड़ीवान छुआछूत से बचा रह सके।

हम अंधेरा होने से पहले गोरेगांव पहुंचना चाहते थे। हमें बताया गया कि वहां पहुंचने में तीन घण्टे लगेंगे। हमने सामान बैलगाड़ी में डाला और हमसे एक बैलगाड़ी हांकने लगा। गाड़ीवान साथ-साथ चलने लगा।

हम एक जगह ताकि भोजन खा सकें किन्तु साफ पानी नहीं था। मेरे भाई ने गाड़ीवान को कुछ पैसे दिए ताकि वह खाना खा कर लौट आए। वह बहुत देर से लौटा। हम भूखे-प्यासे फिर चल दिए। अब गाड़ीवान खुद बैलगाड़ी हांकने लगा। हम तीन घंटे चलते रहे किन्तु गोरेगांव का कहीं कोई संकेत नहीं था। चलते-चलते रात के 10 बज गए। आधी रात को बैलगाड़ी कलक्टर की ठोल-झोंपड़ी पर पहुंच गई। गाड़ीवान ने मुझे समझाया कि यदि पीने का पानी लेना है तो खुद को मुसलमान बताना : मैंने ऐसा ही किया किन्तु पानी फिर भी नहीं मिला। कर्मचारी ने कह दिया : तुम्हारे लिए किसने पानी रखा है। पहाड़ी पर जाओ, वहां से पानी लो।

हमने रात बैलगाड़ी में ही गुजारी। सुबह 8 बजे फिर चल दिए। तीने घंटे की यात्रा के बाद हम गोरेगांव पहुंचे। हमारे पिता के नौकर ने उनको हमारा पत्र नहीं दिया जिससे हमें इतना कष्ट नहीं सहन पड़ा।

मेरे जीवन में इस घटना का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है : मैं केवल 9 वर्ष का था जब ये घटना घटी। इस घटना ने मेरे मन पर अमिट प्रभाव डाला। इस घटना से पूर्व मैं ये तो जानता था कि मैं एक अछूत हूं और कि अछूत के साथ भेदभाव किया जाता है, उससे छुआछात की जाती है। उदाहरणात : मुझे स्कूल में एक कोने में बिठाया जाता था। मैं बैठने के लिए टाट का एक टुकड़ा स्कूल ले जाता था। स्कूल की सफाई करने वाले कर्मचारी मेरे टाट के टुकड़े को छूते तक नहीं थे। सवर्ण विद्यार्थी जब चाहते अध्यापक की आज्ञा लेकर पानी पी सकते थे। मैं पानी के नल की टूटी को नहीं छू सकता था। जब कोई सवर्ण विद्यार्थी टूटी खोलता तो मैं पानी पी सकता था। चपरासी पानी के नली की टूटी खोलता था-चपरासी नहीं तो पानी भी नहीं। कोई धोबी हमारे कपड़े धोने के लिए तैयार नहीं था। कोई नाई हमारे बाल काटने के लिए रजामंद नहीं था। मेरी बड़ी बहन ही हमारे बाल काटा करती थी। इन सभी भेदभावों को मैं जानता था। गोरेगांव की घटना ने मुझे इतना सदमा पहुंचाया जैसे मुझे पहले कभी नहीं हुआ था।''

शेष पृष्ठ 1 का...

बीजेपी को क्यों चूना?

है। यही कारण बीजेपी के हार का रहा जो अभी तक तमाम चुनावी विद्वान विश्लेषकों के नजर में नहीं आया।

कांग्रेस के नेतृत्व में जब सरकार बनी तो उसे एहसास तो था कि दलितों के लिए कुछ करना है और उसकी शुरुआत भी की। डॉ. मनमोहन सिंह ने फौरन सभी विभागों को पत्र लिखा कि सभी खाली पद 2005 तक भर दिए जाएं। न्यूनतम साझा कार्यक्रम में निजी क्षेत्र में आरक्षण देने का वायदा किया। 2004 में मंत्रियों की एक समिति शरद पवार के नेतृत्व में बनाई गयी। यह विचार करने के लिए कि कैसे निजी क्षेत्र में आरक्षण दिया जा सकता है। 2006 में पीएमओ में कोऑर्डिनेशन कमिटी का गठन किया। 2008 में डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रियल पॉलिसी एंड प्रमोशन में अधिकारियों की एक कमिटी का गठन किया। इन तीनों समितियों का उद्देश्य था कि विचार करें कि सरकारी स्तर पर निजी क्षेत्र में भागीदारी देने का क्या उपाय किए जा सकते हैं। दूसरी तरफ देश के प्रमुख व्यापारिक संगठन जैसे सीआईआई, एसोचैम आदि से वार्तालाप करके उन तमाम संभावनाओं को खोजना कि वे अपने यहां दलितों-आदिवासियों को भागीदारी दें। इन्होंने तमाम वायदे जैसे- दलित उद्यमी आदि तैयार करना, कोचिंग, ट्यूशन, स्कॉलरशिप आदि प्रस्ताव सरकार के समक्ष रखें लेकिन कुछ विशेष न किया जा सका। उल्टे कुछ दलितों को आगे खड़ा करके बयानबाजी कराने लगे कि वे दलित उद्यमी बनाने में प्रयास करने लगे हैं। जबकि हुआ यह था कि पहले से थोड़े-बहुत दलित उद्यमी जो अपने बूते पैदा हुए थे, उन्हीं की मार्केटिंग करने लगे और सरकारी पुरस्कार से भी नवाजे। मीडिया में खबरें भी चली लेकिन दलित-आदिवासी समाज के ऊपर कुछ असर नहीं पड़ा क्योंकि ये चंद लोग उसका नेतृत्व करते ही नहीं। कांग्रेसी सरकार का यह भी कार्यक्रम ध्वस्त हुआ।

डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने 2004 में राज्य सभा में आरक्षण कानून बनाने के लिए विधेयक पेश किया जो अब तक पास न हो सका। पदोन्नति में आरक्षण देने के लिए राज्यसभा में बिल तो पास किया परंतु लोकसभा में न किया जा सका। 85वां संवैधानिक संशोधन की पैरवी हमने सुप्रीम कोर्ट में 2006 में की और जीते लेकिन 4 जनवरी 2011 को लखनऊ हाईकोर्ट ने इसे खत्म कर दिया। वहां हम इसे इसलिए नहीं बचा पाये कि सरकार सुश्री मायावती की थी, दलित होने के नाते उनकी जिम्मेदारी थी जिसे वह निभा न सकी। केंद्र सरकार दलितों-आदिवासियों को आकर्षित करने के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के द्वारा एक नीति बनाई कि सरकार जितनी सेवाएं या खरीद निजी क्षेत्र से करती है उसमें 4 प्रतिशत की भागीदारी दलितों की होगी लेकिन उसमें भी कुछ नहीं हुआ। आखिरी संसद सत्र में स्पेशल कंपोनेंट एवं ट्राइबल सब प्लान को लागू करने के लिए संसद में कानून बनाना था, वह भी नहीं किया जा सका। सरकार के कुछ गरीबी उन्मूलन की योजनाएं लागू की गई हैं जैसे-फुड सिक्योरिटी बिल आदि उसका संबंध केवल दलित से नहीं बल्कि सभी वर्गों से है और ऐसी योजनाओं से दलितों का न तो सशक्तिकरण होगा और न भागीदारी होगी जो शक्तिशाली और खुशहाल राष्ट्र के लिए आवश्यक है।

भाजपा में शमिल होने के कई कारण हैं। यह पार्टी न केवल राजनीतिक सत्ता के लिए प्रयासरत है बल्कि समाज की रक्षा की भी उतनी ही जिम्मेदारी महसूस करती है। गत् कई महीनों से लगातार देशभर के मेरे प्रमुख नेताओं और भाजपा के बीच वार्तालाप हुए, तमाम मुद्दों के ऊपर विचारों का आदान-प्रदान हुआ तब जाकर के सहमति बनी। मेरे अकेले भाजपा में शामिल होने से उतनी ताकत नहीं मिल सकती थी जब तक कि देश में दलित, आदिवासी, पिछड़ें और गैर अन्य समर्थकों की सहमति नहीं मिलती। आईआईटी टॉपर श्री लाहिड़ी गुरु का प्रयास है कि भारत में जातिविहीन समाज की स्थापना हो और उनके मध्यस्थता से हमारे एवं पी. डी. एम. का एकदिवसीय चिंतन 24 नवंबर को नागपूर में हुआ। चिंतन यह था कि हजारों वर्ष से दलित और सवर्ण समाज की दूरी को कैसे खत्म किया जाए। अंत में सहमति बनी कि दलितों-आदिवासियों को भाजपा विभिन्न क्षेत्र जैसे-मीडिया, उद्योग-व्यापार, उच्च न्यायालय, ठेका, सप्लाई आदि में भागीदारी दे। आरक्षण राजनीति एवं सरकारी नौकरियों में अगर न हो तो आज भी सभी क्षेत्रों में शून्य की भागीदारी है। अगर यह हुआ तो भारत में जो क्रांति हजारों वर्ष में नहीं हुई थी, वह कुछ सालों में ही होगी।

भाजपा में इसलिए भी शामिल हुआ कि राष्ट्रीयता की चिंता इसके सिवा और किसी दलों को उतनी क्यों नहीं होती। सेक्युलरिज्म को पुनः परिभाषित करना होगा। इन तथाकथित सेक्युलरिस्टों को कश्मीर से भगाए 4 प्रतिशत पंडितों की याद तो नहीं आती लेकिन गुजरात हमेशा इनके दिमाग में रहता है। गुजरात में जो हुआ वह तो बुरा हुआ लेकिन गोधरा में जो हुआ वह भी तो अच्छा नहीं था। 1984 में सिक्खों के साथ जो हुआ वह क्या था? करोड़ों बांग्लादेशी और उसमें से अधिकतर मुसलमान जो भारत में आ रहे हैं उन पर ये क्यों शोर नहीं मचाते ?भारत-पाक के विभाजन के समय वहां 22 प्रतिशत हिन्दू था, अब घटकर के 2 प्रतिशत रह गया है, कहां चले गए वो? बांग्लादेश में 29 प्रतिशत हिंदू हुआ करते थे अब केवल 9 प्रतिशत रह गए हैं। तसलीमा नसरीन कहती है कि यहां के सेक्यूलरिस्ट हिंदू कट्टरवाद पर तो बिफर पड़ते हैं लेकिन मुस्लिम कट्टरवाद पर क्यों चूप रहते हैं? यहां के सेक्युलरिस्ट एवं कम्यूनिस्ट दिन पर दिन इसलिए कमजोर हो रहे हैं कि वे निष्पक्ष और ईमानदारी से सांप्रदायिकता के प्रश्न को नहीं उठाते। भारत में राजनीति करने वालों को समाज की भी चिंता करनी पड़ेगी। हमारा समाज हजारों जातियों में विभाजित ही नहीं बल्कि भेदभाव के झंझावात से गुजर रहा है। भाजपा और संघ को भी दलितों और आदिवासियों के बारे में विशेष कार्यक्रम तैयार करने होंगे और तभी एकात्म और शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।

असली झाडू करेगी सफाया नकली झाडू का

संजय गहलोत

नई दिल्ली, 17 फरवरी, 2014। सफाई कामगार संगठनों का परिसंघ के मुख्य संरक्षक, डॉ. उदित राज ने जंतर-मंतर पर विशाल धरना को संबोधित करते हुए कहा कि यदि श्री अरविंद केजरीवाल की सरकार चाहती तो ठेके पर कार्यरत् कर्मचारियों और जो अस्थाई रूप से काम कर रहे थे, सभी को नियमित कर सकती थी। जनलोकपाल बिल पास कराने के लिए विधेयक का पास होना जरूरी था लेकिन यह कार्य सरकारी आदेश से किया जा सकता था। 48 दिन सरकार चलाने का मौका मिला, ऐसे कार्य करने के लिए एक सप्ताह ही पर्याप्त था। सरकारी आदेश किसी समय भी जारी किया जा सकता था। आरक्षण पर अभी तक आम आदमी पार्टी की नीति स्पष्ट नहीं हो पायी है। जिन कार्यों को करने के लिए विधान सभा की मंजूरी की आवश्यकता थी वह न किया जा सका, वह एक अलग बात थी लेकिन जो सरकारी आदेशों से हो सकते थे क्यों नहीं किए गए, जैसे – बिना ब्याज व्यापार करने के लिए दलितों को कर्ज, डाक्टर, नर्स, इंजीनियर एवं सफाई कर्मी जो ठेके पर थे, उन्हें तो नियमित किया जा सकता था। बिजली पानी आदि की समस्या का भी समाधान नहीं हो सका।

सफाई कामगार संगठनों का परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री विनोद कुमार ने जंतर-मंतर पर विशाल धरना को संबोधित करते हुए कहा कि अब लड़ाई असली और नकली झाडू के बीच होगी। हजारों की संख्या में असली झाडू वाले जंतर-मंतर पर एकत्रित होकर रोष प्रकट किया और आवाहन किया कि सत्ता के लोलुप अरविंद केजरीवाल को धोखेबाजी का जवाब देगें। इन्होंने पंचकुंइया रोड, बाल्मीकि बस्ती से झाडू चुनाव चिन्ह के साथ प्रचार-प्रसार शुरू किया था। इससे बाल्मीकि समाज भावुक होकर इनसे जुड़ा और भारी संख्या में वोट दिया। यदि यह समाज न जुड़ा होता तो आम आदमी पार्टी को इतनी सफलता कभी न मिलती। जनलोकपाल बिल को पास कराने के लिए सरकार दांव पर लगाया लेकिन सफाई कर्मचारियों के लिए एक दैनिक कार्य भी नहीं कर सके कि सरकारी आदेश निकालकर इन्हें स्थाई करते और ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति।

धरना के दौरान मंच पर मौजूद नेतागण (बांये से दांये) : संजय गहलोत, दिलबाग सिंह, विनोद कुमार, चेतन दास चांवड़िया, दिलीप गहलोत, शाहू जी, डॉ. उदित राज, सुरेश कुमार चक, डी. बी. आर्या, राजेश खेड़ी, प्रेमनाथ धींगड़ा, अशोक पारचा एवं अन्य

आम आदमी पार्टी की सरकार ने संविधान की अवमानना की। लगातार अराजकता के कृत्य में लिप्त थे और आगे ऐसा ही जारी रखेगें। जिस दिन मीडिया इन्हें दिखाना बंद कर दे तो पता भी नहीं लगेगा कि कहां गायब हो गए? जिस दिल्ली के मध्यम वर्ग ने इनका समर्थन किया था आज वह खिलाफ हो गया है कि ये सत्ता के भूखे हैं। यदि आम आदमी की समस्याओं का दिल्ली में समाधान करना चाहते तो काफी कुछ कर सकते थे लेकिन सत्ता के भूखे ड्रामा करते रहे और अभी भी कर रहे हैं ताकि लोक सभा चुनाव में इनको अधिक से अधिक सफलता मिल सके।

इस अवसर पर परमेंद्र, संजय गहलोत, दिलबाग सिंह, विनोद कुमार, चेतन दास चांवड़िया, दिलीप गहलोत, शाहू जी, डॉ. उदित राज, सुरेश कुमार चक, डी. बी. आर्या, राजेश खेड़ी, प्रेमनाि धींगड़ा, अशोक पारचा, महेंद्र सिंह, पप्पू तंवर, विनोद पिहाल, आनंद स्वरूप लुक्कड़, शिवनारायण, अजय कुमार, राजकुमार भगत, अंगूरी धैर्या एवं अन्य मौजूद थे। मंच का संचालन सफाई कामगार संगठनों का परिसंघ के राष्ट्रीय महासचिव श्री परमेंद्र ने सुचारू रूप से किया।

धरना में शामिल अपार भीड़

भीड़ को संबोधित करते (बांये से दांये) श्री विनोद कुमार एवं माननीय डॉ. उदित राज

शेष पृष्ठ 1 का...

डॉ. उदित राज भाजपा में शामिल हुए

शुरू होगा। हम दलित-आदिवासी एवं अति पिछड़े समाज से विशेष रूप से आग्रह करते हैं कि दुष्प्रचार में न आएं कि भाजपा उनकी विरोधी है बल्कि अब समय आ गया है कि सही निर्णय लें और पूरी ताक़त से समर्थन देकर केन्द्र में आगामी सरकार बनवाएं। भारतीय जनता पार्टी अखण्ड और शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण चाहती है और वह तभी संभव है जब हमारा सहयोग उसे मिले। सहयोग मिलता है तो सरकार बनती है, तभी हमें विभिन्न क्षेत्र जो उपरोक्त में उल्लिखित हैं, भागीदारी मिलेगी। अफसोस होता है कि हमारा विशाल देश आतंकवादी गतिविधियों का स्थल बन गया है। पाकिस्तान से हिन्दू भगाए जा रहे हैं जो यहां आकर शरण ले रहे हैं और बांग्ला देश से सीमा पार करके मुसलमान भारत में घुसपैठ कर रहे हैं। चीनी घुसपैठ भी देश के लिए बड़ी समस्या है। यदि दलित-आदिवासी भाजपा का साथ दें तो केन्द्र में भाजपा की सरकार बनने से कोई रोक नहीं सकता। अगले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी बनते हैं तो दलितों-आदिवासियों को भागीदारी ही नहीं मिलेगी बल्कि एक खुशहाल और शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण की शुरुआत होगी।

09999504477
पर मिस काल करें

यदि आप जातिविहीन समतामूलक समाज की स्थापना के पक्षधर हैं, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक भागीदारी के समर्थक हैं और अजा/जजा परिसंघ तथा इससे जुड़ी नवीनतम गतिविधियों की जानकारी चाहते है तो नीचे लिखे नम्बर पर मिस काल करें और कम से कम 10 साथियों को भी ऐसा करने के लिए कहें

09999504477

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशिः

पांच वर्ष : 600 रुपए
एक वर्ष : 150 रुपए

REAL JHADU VS FAKE JHADU

Sanjay Gehlot

New Delhi, February 17, 2014. Dr. Udit Raj, Chief Patron, Confederation of Safai Kamgar Organisations, addressed a large gathering of contractual and temporary safai karamachari at Jantar-Mantar, New Delhi who demonstrated for their unfulfilled demands by Mr. Arvind Kejriwal government. Jhadu (broom) has been the destiny of Valmiki community and that was taken away by the Aam Admi Party as its symbol based on which they got the votes of these people. They got maximum votes of the Valmikis. For Jan Lokpal Bill it was mandatory to pass it in the assembly but regularizing the daily wagers and contractual workers needed a simple executive order. Safai Karmacharis now feel cheated. Other promised demands like disbursing loans to the scheduled castes at zero interest, regularizing the nurses, doctors, engineers on contract basis would have been also meted out by government orders. In fact, Aam Aadmi Party leaders always eyed on Loksabha elections instead of implementing the manifesto.

Shri Vinod Kumar, National Chairman, Confederation of Safai Kamgar Organisastions, said that Shri Arvind Kejriwal very cleverly inaugurated the launching of his party and its election campaign from Valmiki Mandir, Valmiki Basti, Panchkuiyan Road, Delhi and election symbol was declared as Jhadu. Because the Valmikis are mentally attached to Jhadu, they became emotional and of their own they associated themselves with this party. The other reason for their alliance with the Aam Admi Party was the promise made by the party that not only the temporary employees will be regularized but the contract system for Safai Karmacharis would be abolished. There are approximately 77 departments in Delhi Govt. and if different commissions and boards are also included then the total number of such departments and institutions would become approximately 100 where employees are working against contract and have not been regularized. Kejriwal had said that his govt. will be different from previous governments and would have a direct dialogue with the people. Safai karamcharis are now vowed to teach lesson to Aam Aadmi Party in Loksabha election. They are anarchic force and would never deliver. He called upon saner elements in the country to be aware of them.

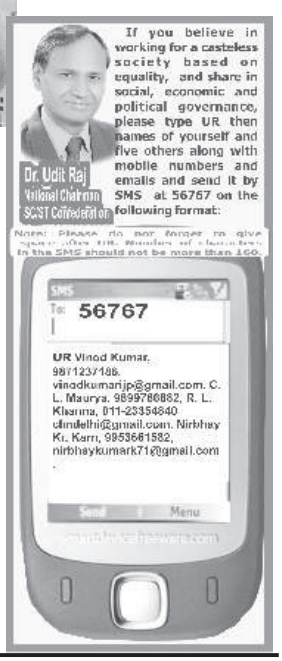

Rest of Page 8...

RESERVATION HAS STRENGTHENED INDIAN SOCIETY

easily in the present times. In 1957, Lord Clive, with the help of 540 British infantry, 600 Royal Navy Sailors, 800 soldiers and 14 field guns captured Kolkata. This did not happen for the first time but in the past also, invaders came in succession with a handful of people and ruled over the country. Whichever society is divided shall always remain weak.After Independence, the country has not become slave nor can it become so. In the past it so happened because people were divided into more than 6700 castes based on their birth and profession. Only the Kshatriyas were assigned the job of defending the country. Keeping in view the population of the country, people of one particular caste were neither capable of doing administration of the country properly nor were competent enough to thwart the onslaught of invasions of the invaders. In the people of other castes, there was no such feeling of defending their motherland but Dalits and backwards were used by the upper caste people exclusively for their service. Now in the day-to-day governance of the country, there is the participation of people from nearly all castes which creates a sense of love for the country among people of nearly all castes. According to Dwivedi Ji, participation of these castes in governance should not be there even though it will not happen because the Congress Party has also disassociated itself from Dwivedi Ji's statement. If it affects the participation of governance of people of different castes, then it will certainly affect the unity and integrity of the country.

In modern India's metros, young men and women are often seen to be criticizing reservation. They think that reservation is a compromise on merit which ultimately affects the progress of the country. The present generation is not aware of the reality behind the existing situation. It can be said that these young persons have got this feeling from their parents that reservation hits their chances of getting jobs etc. Why do their parents not tell them that before independence, India had not won a single war and there was no reservation at that time. The

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22**,** Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

LIE AND CORRUPTION

Dr. Udit Raj

Sometimes falsehood and corruption appear more unpalatable. There is an old saying "Satyam bruyat, priyam bruyat" i.e. while speaking the truth, we should do it without any rancor. It is not necessary that truth shall always be pleasant. Such a mindset and social values do not culminate over-night but are the outcome of centuries. At present, the anti-corruption sentiment is very high. We need to analyze whether the persons who are supporting the anti-corruption movement are genuinely supporting it. It may be mentioned here that this movement includes mostly those people who are themselves deprived of power and wealth. It is quite likely that if and when they get an opportunity, they would not hesitate to indulge in corruption. Corruption has become a very hot issue in our country but there are indeed very few people who are ready to go into the depth of the problem. A disease can be treated properly only if it has been diagnosed correctly. Undoubtedly corruption is rampant in the country but nobody is trying to find out the reasons for the same. Government has its own limitations and it can check corruption by enacting laws and not by removing various reasons and conditions leading to corruption. Besides the Government, all other organizations and people have an equal responsibility to remove corruption. Is it not the responsibility of the intellectuals, social reformers and various social and financial organizations to take up this issue? Simultaneously other issues like social justice and establishment of an egalitarian society should also be taken up along with campaign against corruption. It is true that so many issues cannot be taken up at a time but without the important issues of social justice and establishment of an egalitarian society, it is impossible to achieve the goal of a corruption-free society. The prime objective of Jaiprakash Narayan's campaign was also the establishment of a corruption-free society but it fizzled out. So was the case with the campaign of V.P. Singh and all of us know the consequences of his campaign. India is a country of diversity and no campaign can succeed unless it is launched keeping in view this diversity.

Lie is not taken that much seriously as economic corruption in our society. Arvind Kejriwal swore by his children that he would not seek the support of any party but he took support of the Congress Party. Till recently, Kejriwal was telling emphatically that he would contest against Narendra Modi from whichever constituency he files his nomination but now he is backing out of his own statement on this issue. He could have fulfilled the promises made in his letter but he did not do so. Thousands of Safari Karamcharis under the leadership of the Confederation of Safai Kamgar Organizations organized a dharna at Jantar Mantar on 17.2.204 and asked why he could not issue a Government order during 49 days of the tenure of his Government to put an end to the contract system for Safai Kamgars and for which there was no need to bring out a bill in the Assembly. What to talk of 49 days, this job could have been done in less than 49 minutes. Most of the promises made by him could be fulfilled by issuing Government orders. He had said that within 30 days of his coming to power, the corrupt people will be sent to jail but could he send even a single corrupt person to jail? It is also being claimed that according to Transparency International, there was a decline in corruption during the AAP Government tenure which has proved to be a farce. During the elections, it was also said that Power Distribution Companies are indulging in power pilferage up to 50% which also proved to be wrong because the companies are spending up to 80% on purchasing power from outside. He had said that he would hold public meetings for the redressal of people's grievances but not a single such meeting has been held. AAP Government Ministers conducted raids on Education and Health Departments but no such action was taken in departments where there is maximum corruption. How many raids were conducted on Water tank mafia, sand mining mafia, land mafia, pharmaceutical companies, fruit and vegetable wholesalers and why no action has been taken against them?

The issue of social justice was conspicuous by its absence. In this country, maximum number of people are victims of caste discrimination, inequality, violation of human rights and rotten social values as compared to corruption. Ever since Independence, different Governments and politicians did not take any concrete steps against social evils and inequality. Nationalism has been at a low ebb in our age-old society. A handful of foreign invaders could easily conquer and rule over us. Majority of the people were not bothered whether the country belonged to them or someone else. Even though at the time of invasions, there was some resistance but afterwards, the invaders were accepted as rulers in the normal routine. The main reasons for this situation were social and religious practices prevailing in the society at that time. When persons belonging to a particular caste were assigned the job of night-soil carrying and scavenging by birth, then obviously people of that caste would hardly have any concern for the country or society. Again, when people of a caste are by birth, assigned the job of carrying the bodies of the dead animals, they take it as their fate and they remain totally unaware of things like having a share in governance. Had there been social and national awareness from the very beginning, there would not have been so much of corruption. Corrupt people do not have any sense of patriotism and even if it is there, it is his second priority. Economic corruption cannot be abolished so easily and people who are day-dreaming that the AAP campaign will bring an end to corruption, do not have knowledge of history and also do not understand its social implications. Any society which forgets its history, neither lives rightly in the present nor can build up its future. Corruption must be abolished but the anti-corruption protagonists should not exploit the innocent masses for their selfish ends. They will have to view the issue of corruption in its totality. Does any God or deities expect that the devotees should offer to them flowers, fruit, sweets, clothes, gold, silver, chicken, goats but people are doing it. It has become our mindset that we cannot get our job done without paying bribe and this is one of the reasons for corruption. Lie is much more dangerous than corruption. Sometimes lie takes the whole nation and the society towards a wrong direction. Corruption is a byproduct of lie. After all, when one man gives bribe and the other man takes, this act is never made public or shared with any other person.

Rest of Page 8...

Why we have joined BJP?

improving the deteriorating condition of Dalits and Adivasis. The Reservation Bill has been lying pending in the Parliament since 2004 which has not been passed till date. Reservation in Promotion Bill was passed in the Rajya Sabha but has not been passed in the Lok Sabha till date. In the Common Minimum Programme, the UPA Government in 2004 had promised to give reservation in the private sector but the matter remained confined to meetings of different committees.When the Bahujan Samaj Party came into existence, a new economic policy had come in the country which brought about globalization, liberalization and privatization. Because of privatization, here is a continuous decline in the jobs in the government. What is the big advantage of the rise of Dalit leadership? The real gain would have been if it would have either stopped liberalization and privatization or inclusion of SC/ST in private sectors. In these circumstances, what is the relevance of Bahujan Samaj Party.

The All India Confederation of SC/ST Organizations started a movement in 997 for withdrawal of five anti-reservation orders. It may be mentioned here that when Department of Personnel & Training, Government of India, issued these orders, the Government of the time was of so called social justice. Afterwards, NDA Government came into power under the leadership of Shri Atal Bihari Vajpayee. Our struggle for withdrawal of anti-reservation orders continued and the Vajpayee Government made 81st, 82nd and 85th constitutional amendments and then the reservation benefits were restored.

Under the leadership of Shri Rajnath Singh and Shri Narendra Modi, the BJP will not only fulfill our demands but will also usher in the period of their governance in different fields. We earnestly appeal to Dalits/Adivasis and Most Backwards that they should not fall a victim to the vile propaganda of certain forces that BJP is against them. Rather now the time has come that Dalits and Adivasis should take a correct decision and strongly support the party so that it may come to power at the Centre. Bhartiya Janata Party firmly believes in strong and sovereign India and it is possible only if the party gets our support. When the BJP Government comes into power with our support, we shall certainly get our share in the areas mentioned above. It is indeed unfortunate that our vast country has become a breeding ground for terrorism. Hindus are being driven out from Pakistan and are taking shelter in India. From Bangladesh, Muslims are crossing the borders and entering into our country. The Chinese intrusion has also become a big issue. If Dalits and Adivasis support BJP, then nobody can stop it from coming into power at the centre. When Shri Narendra Modi becomes the Prime Minister, Dalits and Adivasis will not only get participation in governance but we shall be equal partners in ushering in a prosperous and strong India.

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 17 ● Issue 7 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 16 to 28 February, 2014

Why we have joined BJP?

Dr. Udit Raj

New Delhi, 24th February, 2014. Today, along with some of my prominent leaders of the country, I have joined Bhartitya Janata Party which is continuously on the path of progress and prosperity under the leadership of Shri Rajnath Singh and Shri Narendra Modi for ensuring a share in governance (Bhagidari) for Dalits and Adivasis and for building a strong nation.

After Independence, the reins of power have mostly been in the hands of the Congress Party. Even after sixty-six years of Independence, there has not been any significant change in the socio-economic life of Dalits and Adivasis. Had reservation in Govt. jobs and legislatures and peoples representation not been there, their condition would have been the same as it was when we got Independence. Even now the participation of Dalits and Adivasis in trade, stock market, higher education, media, higher judiciary, art and culture, infrastructure, telecommunication, different service sectors, supply, contracts, import-export, I.T. sector etc. has been negligible. Can we build a strong, prosperous and sovereign India without the inclusion of Dalits, Adivasis and backwards in governance.

In the present tenure of UPA lasting for about ten years, there is not a single achievement which can be attributed to the UPA for

Rest on Page-7...

RESERVATION HAS STRENGTHENED INDIAN SOCIETY

Dr. Udit Raj

Congress leader Janardan Dwivedi has said that reservation should be on economic ground rather than caste-based. Had the Indian society been really working on the basis of economic factors, we would have been a super power in the world and the maximum number of people suffering from poverty and malnutrition would not have been living in India. Huge gap in the male-female ratio would not have been there. World's largest number of blind persons, lepers, disabled and beggars would not have been found in India. The country would not have remained slave for thousands of years. There would have also not been such a large number of molestations and rapes against women.

Dwivedi Ji should first talk to people of his caste whether they really want reservation on economic ground. When classification of people will be done on the basis of their work and profession and not on the basis of birth, then it is quite possible that Brahmins might have to do the job of scavenging and night-soil carrying. Let us take that a well-off person from the upper caste may not feel the necessity of doing this job but a upper caste person from a poor family may have to do this job otherwise who will be carrying out the job of cleaning toilets, drains and roads etc. Now some people are commenting that the upper caste people have started doing the Safai work but the reality is that they do take salary for this work but ultimately get this work done by Dalits only. The society does not work on exceptions. Will they able to do the job of cleaning clothes? Will they able to do the job of carrying and transporting dead animals, process the skin of the dead animals and then making different types of by-products out of the animal hyde. In that case, they will have to do the job of pig rearing, and poultry farming. Dwivedi and people of his caste should thank their stars that jut by giving reservation in government jobs and legislature, they have established their suzerainty in all other sectors. The Dalits and Adivasis have their share of governance only in Government jobs and legislatures. It is only because of the movements and campaigns of Dalits that backwards have got the benefit of reservations. Till date, vacant posts against reservation have not been filled up. According to the last year's figures, out of 149 Secretaries to the Govt. of India, not a single person belongs to SC category.

Dwivedi Ji knows it well that poor Dalits and poor upper caste people will not do inter-caste marriages and social inter-action. The upper caste people keep distance even from the upper caste people barring a few exceptions. A poor upper-caste person has a greater caste bias because his education and understanding is not of a higher level. When the senior Congress Dalit leader Shri Jagjiwan Ram unveiled the statue of Dr. Sampurnand at Banaras, the next it was cleaned with Ganga jal. Who does not know that Babu Jagjiwan Ram was a powerful leader of the country? There would be nothing like if the social status and respect in the society even business activities are based on economic factors.

Modernization in urban cities has given the impression to Dwivedi Ji that that casteism has disappeared from the society. Even when the country was repeatedly defeated by the foreign powers, the upper caste did not urge the society to set their house in order by abolishing the caste system. When it could not be abolished at that time because of pressing reasons, it cannot be abolished so

Rest on Page-6...

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by N. K. Karn